IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

प्रो. जी. एस. घुरिये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. धीरेंद्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, चित्रकूट

सारांशः

भारत विद्याशास्त्र का अर्थ है, भारतीय संस्कृति की विशिष्टता के संदर्भ में भारतीय समाज एवं संस्कृति का अध्ययन करना। भारत विद्या शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज को समझने हेतु उन ग्रंथों एवं महाकाव्यों की सहायता ली जाती है जिनमें भारतीय समाज का विस्तृत चित्रण किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य के समर्थकों की मान्यता है कि भारतीय सामाजिक संस्थाओं की व्याख्या प्राचीन ग्रंथों द्वारा प्राप्त तथ्यों से ही संभव है। ग्रंथों की प्राचीनता उसकी प्रामाणिकता को बढ़ाती है, यह एक प्रकार से पुस्तकीय परिप्रेक्ष्य है, जिसमें किसी भी प्रकार के क्षेत्र कार्य को अस्वीकृत किया जाता है। केवल उस समाज से संबंधित शास्त्रीय ग्रंथों में संकलित सामग्री को ही विश्लेषण का आधार बिंदु माना जाता है। इसलिए इसे भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ–साथ पुस्तकीय अथवा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य भी कहा जाता है। पी.एच. प्रभु का हिंदू सामाजिक संगठन पर अध्ययन, के.एम. कपाड़िया का हिंदू नातेदारी का अध्ययन, प्रोफेसर ए.आर. पिल्लई का जाति पर अध्ययन तथा इरावती कर्वे का हिंदू समाज का अध्ययन इस परिप्रेक्ष्य द्वारा हुए अध्ययनों के प्रमुख उदाहरण हैं। जी.एस. घुरिये इस परिप्रेक्ष्य के प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं। उन्होंने जाति, वर्ग एवं व्यवसाय, नातेदारी व्यवस्था, भारतीय सभ्यता, मूल्य तथा भारतीय नगरों जैसे विषयों पर अपने अध्ययनों में इस परिप्रेक्ष्य को अपनाया है। हालाँकि घुरिए की रचनाओं में इंडोलॉजी के अतिरिक्त प्रसारवादी तथा परसंस्कृतिग्रहणवादी दृष्टिकोण का भी प्रभाव रहा है। इसके अतिरिक्त राधाकमल मुखर्जी, डी.पी. मुखर्जी, टी.एन. मदान भी भारत विद्या शास्त्र से प्रभावित रहे हैं।

मुख्य शब्दः .परिप्रेक्ष्य, विद्याशास्त्र, समाजशास्त्र, अध्ययन , घुरिये ।

शाब्दिक रूप से भारत विद्याशास्त्र अथवा इण्डोलॉजी (Indology) ज्ञान की वह शाखा है जो भारत की परम्परागत संस्कृतिक तथा यहाँ की प्रमुख परम्पराओं का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करती है अध्ययन के एक उपागम के रूप में यह वह दृष्टिकोण है जिसके द्वारा भारतीय समाज की संरचना का अध्ययन भारतीय समाज की संस्कृति के सन्दर्भ में किया जाता है। यह उपागम इस बात पर बल देता है कि भारत की सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक संरचना तथा परिवर्तन की प्रक्रियाओं को यहाँ के प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर ही समझा जा सकता है। अति प्राचीनकाल से ही ऋषियों तथा मनीषियों के रूप में भारत के सामाजिक अध्येताओं ने जीवन के कुछ प्रमुख लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए एक लम्बे अनुभव के आधार पर उन संस्थाओं को विकसित किया जिनके द्वारा यहाँ एक विशेष जीवन–विधि को विकसित किया जा सके। इनकी विवेचना जिन धर्म–ग्रन्थों में की गयी, उनकी प्रामाणिकता में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण इन ग्रन्थों में दी गयी व्यवस्थाओं तथा जीवन–मूल्यों को समझे बिना भारत के सामाजिक ज्ञान की सार्थकता को नहीं समझा जा सकता। इस अर्थ में भारत विद्याशास्त्रीय उपागम ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक उपागम से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

भारतवर्ष में भारत विद्याशास्त्र का विकास एक स्वतंत्र विषय के रूप में पश्चिमी विद्वानों के द्वारा विकसित किया गया। सर्वप्रथम विलियम जोन्स ने 1784 में एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल की स्थापना की जिसमें भारतीय धर्म ग्रंथों का वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण आरंभ हुआ। 1886 में थियोसोफिकल सोसाईटी के तत्वाधान में भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र की स्थापना की गयी। 1891 में द ओरिएंटल रिसर्च इंन्स्टीट्यूट मैसूर में तथा 1917 में पूणे में भारतीय समाज तथा संस्कृति के अध्ययन के लिए भंडारकर इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। 1919 में बंबई विश्वविद्यालय में जब समाजशास्त्र का विभाग खुला तब तक भारत विद्याशास्त्र एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित हो चुका था तथा इसके अध्ययन के परिप्रेक्ष्य से आरंभिक भारतीय विद्वान काफी प्रभावित थे।

इंण्डोलॉजी के अंतर्गत दो प्रकार के अध्ययन दृष्टिकोण देखने को मिलता है:–

(**i**)प्राच्य विद्या (**Oriental School**)–जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक विद्वान आते हैं जो औपनिवेशिक श्रेष्ठता की मानसिकता से ग्रस्त थे। उनके भारतीय विद्या के अध्ययन के मूल में उसके प्रति दुर्भावना का भाव महत्वपूर्ण था जिसके कारण उन्होंने अतिवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए उनकी कमियों को उजागर किया तथा उसकी आलोचना करते हुए पश्चिमी विद्या की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। मैक्समूलर, जेम्स मिल, विलियम आर्चर, बुगले, विलकिंसन, विलियम जोन्स आदि इसके समर्थक विद्वान है।

(**ii**)भारत विद्या अध्ययन (**Indology**)–इसमें भारतीय ज्ञान के प्रति होने वाली जिज्ञासा के समाधान को महत्व दिया जाता है जिसमें भारतीय दर्शन तथा अध्यात्म के प्रति अतिरंजनावादी दृष्टिकोण को स्वीकार किया गया है तथा भारतीय दर्शन को सर्वाधिक वैज्ञानिक संतुलित एवं उपयोगी बताया गया। आनंद कुमारस्वामी, ए. के. सरन, पी. एन. प्रभु आदि इसी विचारधारा के समर्थक विद्वान हैं।

भारत विद्याशास्त्रीय उपागम कुछ विशेष मान्यताओं पर आधारित हैं जिनके सन्दर्भ में ही इसकी प्रासंगिकता को समझा जा सकता है:–

1.किसी भी समाज का व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक होता है।

2.किसी समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और अतीत की समझ उस समाज के प्राचीन धर्मग्रंथों, महाकाव्यों, भाषाओं, ऐतिहासिक प्रलेखों आदि के अध्ययन से प्राप्त होती है अर्थात् भारतीय समाज के परंपरागत दर्शन एवं चिंतन के बारे में जानकारी शास्त्रीय ग्रंथों, महाकाव्यों आदि के अध्ययन द्वारा ही संभव है।

3.धर्मग्रंथों, महाकाव्यों, ऐतिहासिक प्रलेखों आदि में वर्णित सामग्री न केवल संबंधित समाज के आदर्श चित्र को प्रस्तुत करती है बल्कि इनका ज्ञान वर्तमान समाज में नैतिक नियमों की पुनर्स्थापना में भी सहायक होता है।

4.भारतीय समाज को समझने के लिए भारतीय जीवन पद्धति से सम्बन्धित सिद्धान्तों तथा अवधारणाओं को समझना आवश्यक है। इनका स्पष्ट रूप भारत के उन धर्म ग्रन्थों से उपलब्ध हो सकता है जो काल्पनिक या आदर्शात्मक न होकर मनीषियों के लम्बे परीक्षणों तथा अनुभवों से सम्बन्धित हैं।

इण्डोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य की इन्हीं मान्यताओं को स्वीकार करते हुए कुछ विद्वानों ने भारतीय समाज के विश्लेषण का प्रयास किया और अपने अध्ययन को भारतीय समाज के उन दार्शनिक एवं संस्थागत आधारों पर केन्द्रित किया जिनका उल्लेख इन शास्त्रों व महाकाव्यों में किया गया है। धर्म की प्रभाविता, पुरुषार्थ, कर्म व पुनर्जन्म की धारणा, ऋण व यज्ञ की धारणा, संस्कार,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था आदि वे दार्शनिक व संस्थागत आधार हैं जिनका उल्लेख इन धर्म ग्रंथों व महाकाव्यों में किया गया है और जिनसे भारतीय समाज में स्थायित्व, सहिष्णुता, अनुकूलनशीलता, ग्रहणशीलता, सर्वांगीणता, बहुलवाद, अनेकता में एकता तथा अलौकिकता जैसे तत्व विकसित हुए हैं।

घुरिये तथा भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

जी.एस. घुरिये ने मुख्य रूप से भारतीय समाज का अध्ययन करने में जो अध्ययन पद्धति अपनाई है वह ऐतिहासिक एवं भारत विद्याशास्त्रीय पद्धति है। घुरिये ने अपने सभी अध्ययनों में तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया है। यह पद्धति घुरिये एवं उनके समाजशास्त्रीय शिष्य के महत्वपूर्ण योगदान पर आधारित है। इस पद्धति में भारतीय इतिहास तथा महाकाव्य जैसे परंपरागत ग्रंथों को आधार माना गया है इसलिए घुरिये की इस अध्ययन पद्धति को भारत विद्याशास्त्र के नाम से जाना जाता है। घुरिये ने अपने समाजशास्त्रीय विश्लेषण में अनेक विषयों की विवेचना की है एवं भारतीय समाज का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने जाति व्यवस्था, नातेदारी प्रथा, सौंदर्यशास्त्र, वेशभूषा का गति विज्ञान, भारतीय नगर, ग्रामीण समाज में होने वाले परिवर्तन, भारतीय आदिवासी एवं प्रजाति, भारतीय साधु तथा सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। भारतीय संस्कृति और समाज के विभिन्न पक्षों के अध्ययन में उन्होंने भारत विद्याशास्त्र का प्रयोग किया। उनका भारतीय साधु, धार्मिक चेतना एवं दो ब्राह्मणवादी संस्थाओं के रूप में गोत्र एवं चरण, नामक अध्ययनों में भारत के पौराणिक एवं धार्मिक ग्रंथों का प्रयोग किया है। घुरिये ने भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य द्वारा भारतीय साधुओं के उत्थान, इतिहास, कार्य और वर्तमान में हिंदू साधुओं के संगठनों का उल्लेख किया है। घुरिये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के प्रति काफी लगाव था परंतु उन्होंने सामाजिक–सांस्कृतिक मानव शास्त्र में प्रचलित क्षेत्र, कार्य, परंपरा के प्रति भी अरुचि नहीं दिखाई। उन्होंने अपने कई अध्ययनों में क्षेत्र, कार्य विधि, सर्वेक्षण विधि और सांख्यिकी विधि का प्रयोग कर भारतीय समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र में अनुभववादी परंपरा को मजबूत किया।

भारतीय जाति एवं नातेदारी व्यवस्था

घुरिये ने भारतीय समाज में विद्यमान जाति तथा नातेदारी व्यवस्था एवं जाति और प्रजाति पर कास्ट एंड रेस इन इंडिया नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में घुरिये ने जाति के उद्भव से लेकर उसके भविष्य तक का विश्लेषण किया है। उन्होंने जाति प्रथा की ऐतिहासिक, तुलनात्मक और एकीकृत परिप्रेक्ष्य में जाँच की है। जाति को एक जटिल घटना बताते हुए इसकी निश्चित शब्दों में बँधी हुई कोई सामान्य परिभाषा न देकर उसे छः विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट किया है:–

1.समाज का खंडात्मक विभाजन

2.संस्तरण

3.खान–पान और सामाजिक व्यवहार पर नियंत्रण

4.विभिन्न जातियों की नागरिक और धार्मिक निर्योग्यतायें और विशेषाधिकार

5.व्यवसाय के स्वतंत्र चयन का आभाव

6.विवाह पर (अंतरजातीय) प्रतिबन्ध

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

जाति के उद्भव के बारे में घूरिये ने प्रजतिक सिद्धांत का समर्थन किया है जाति और प्रजाति में आतंरिक सम्बन्ध मानते हुए उन्होंने हिन्दू जनसंख्या को उनकी शारीरिक विशेषताओं के अधर पर छः वर्गों में विभाजित किया है ये वर्ग है–इंडो आर्यन,पूर्व द्रविड़,द्रविड़,पश्चिमी,मुंडा और मंगोलियन।

जाति के उद्भव के बारे में घूरिये ने कहा है कि "जाति प्रणाली इंडो आर्यन संस्कृति के ब्राम्हणों का शिशु है जिसका पालन–पोषण गंगा के मैदान में हुआ और वहां से देश के दुसरे भागों में लाया गया"

घुरिये ने भारत–यूरोपीय संस्कृतियों में नातेदारी व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया। जाति और नातेदारी के अध्ययन में घुरिये ने दो बातों पर विशेष बल दिया।

1.भारत की नातेदारी और जाति व्यवस्था की तरह कुछ अन्य देशों में भी ऐसी ही व्यवस्था है।

2.भारत में नातेदारी और जाति व्यवस्था एकीकृत ढाँचे का कार्य करती है। भारतीय समाज का विकास इन व्यवस्थाओं के माध्यम से विभिन्न जातीय और नृजातीय समूहों के एकीकरण पर आधारित है।

घुरिये ने बताया कि गोत्र तथा चरण भारतीय यूरोपीय भाषाओं की स्वजन श्रेणियां थीं। ये श्रेणियाँ भूतकाल में ऋषि द्वारा दी गई थी। यह ऋषि गोत्र और चरण के वास्तविक संस्थापक थे। भारत में वंश क्रम का जन्म आवश्यक नहीं कि रक्त संबंध में ही खोजा जाए, बहुत सी वंश परंपराएँ प्रायः अतीत के ऋषियों के आध्यात्मिक उद्भव पर आधारित थीं। नातेदारी व्यवस्था से हटकर गुरु–शिष्य संबंध भी दिखलाई पड़ते हैं, यह भी आध्यात्मिक वंश क्रम पर आधारित थे। जाति और उपजाति लोगों को व्यवस्थाबद्ध रूप में एकीकृत करती थी जो उनके वंश की शुद्धता और अशुद्धता पर आधारित होती थी।

अंतर्विवाह तथा सहभागिता के नियम जातियों को एक दूसरे से अलग करते थे। वे वास्तव में जातियों के एकीकरण के साधन रूप में तथा विभिन्न जातियों को सामूहिकता में संगठित करते थे। भारत में ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र की व्याख्या द्वारा जाति विन्यास और क्रमों के वैधीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जाति के संदर्भ में घुरिये की पुस्तक के पूर्वानुमान सही सिद्ध हुए। घुरिये के जाति संबंधी विश्लेषण वर्तमान भारतीय समाज में भी दिखाई देता है। इसी संदर्भ में दक्षिण भारत में नाडार, रेड्डी और कामा जातियों ने, महाराष्ट्र में सारस्वत ब्राह्मणों ने और उत्तर भारत में वैश्य एवं कायस्थों ने अपनी जाति सभाओं की स्थापना की। घुरिये का पूर्वानुमान था कि भविष्य में यह जाति सभाएँ अपनी जाति के संबंध के आधार पर लोगों में राजनीतिक जागरूकता को जन्म देंगी। आजादी के बाद भारत में जाति सभाएँ अपनी जाति के लोगों को राजनीतिक सुविधाएँ दिलाने के लिए काफी प्रयासरत रहीं।

भारत में जनजातियों का अध्ययन

घुरिये ने द शेड्यूल ट्राइब नामक पुस्तक में जनजातियों की समस्याओं एवं समाधान के बारे में विस्तृत चर्चा की है। अपनी पुस्तक में उन्होंने भारत की जनजातियों के ऐतिहासिक, प्रशासनिक और सामाजिक आयामों का वर्णन किया। घुरिये के विचार से भारतीय जनजातियों की स्थिति पिछड़े हिंदुओं जैसी थी, इसका कारण उनका हिंदू समाज से पूरा एकीकरण न हो पाना है। दक्षिण मध्य भारत में रहने वाले संथाल, भील और गोंड आदि जनजातियों के कुछ भाग हिंदू समाज से पूरी तरह से एकीकृत हो गए हैं। जनजाति जीवन में हिंदू धर्म के मूल्यों और प्रतिमानों को सम्मिलित करना एक सही कदम था। हिंदुओं के सामाजिक वर्गों के साथ बढ़ते संपर्क के कारण जनजातियों ने धीरे– धीरे हिंदुओं के कुछ मूल्यों और जीवन पद्धति को अपना लिया। फलस्वरूप उन्होंने शराब पीना छोड़ दिया, शिक्षा प्राप्त करना आरंभ कर दिया और हिंदू कृषकों के प्रभाव से कृषि के तरीकों में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

भी सुधार किया। द शेड्यूल ट्राइब नामक पुस्तक में घुरिये ने जनजातियों का हिंदुओं, ईसाइयों एवं अन्य लोगों के संपर्क एवं उनमें सात्मीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं तथा जनजातियों के प्रति अंग्रेज शासकों की नीति का वर्णन किया है। इस पुस्तक में जनजातियों की समस्याओं के समाधान हेतु बुद्धिजीवियों द्वारा प्रस्तुत तीन दृष्टिकोण राष्ट्रीय उपवन,पृथक्करण एवं सात्मीकरण का उल्लेख किया गया है।

भारतीय परंपरा में साधु की भूमिका

घुरिये ने अपनी पुस्तक इंडियन साधुज में संन्यास की दोहरी प्रकृति की समीक्षा की है। भारतीय संस्कृति में यह माना जाता है कि साधु या संन्यासियों को सभी जाति प्रतिमानों, सामाजिक परंपराओं आदि से मुक्त होना चाहिए। वास्तव में वह समाज के दायरे से मुक्त होता है। शैव मतावलंबियों में यह रिवाज है कि जब उनके समूह का कोई व्यक्ति संन्यास के मार्ग को अपनाता है तो उसका नकली दाह संस्कार कर देते हैं। इसका अभिप्राय है कि वह समाज के लिए तो मृत समान है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से उसका पुनर्जन्म होता है। घुरिये ने बताया कि आठवीं शताब्दी के सुधारक शंकराचार्य के समय से हिंदू समाज का मार्गदर्शन साधुओं ने किया। वे साधु एकांतवास से नहीं थे, इनमें से अधिकांश मठ व्यवस्था से जुड़े हुए थे। जिनकी अपनी विशिष्ट परंपरा होती थी। यह मठ परंपरा जैन तथा बौद्ध धर्म की देन है। घुरिये ने बताया कि भारतीय साधुओं का काम धार्मिक विवादों में मध्यस्थता करना था। वे धर्म ग्रंथों के अध्ययन और अध्यापन के संरक्षक थे और बाहरी आक्रमणों से धर्म की रक्षा करते थे। इस प्रकार हिंदू समाज में संन्यास एक रचनात्मक शक्ति के रूप में था। घुरिये के अनुसार संन्यास अतीत का अवशेष मात्र नहीं है। अपितु वह हिंदू धर्म का प्राण भूत पहलू है। आधुनिक युग में स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती और श्री अरविंद घोष जैसे प्रसिद्ध संन्यासियों ने हिंदू धर्म के उत्थान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत में ग्रामीण शहरीकरण

अपनी पुस्तक Cities and Civilization में घुरिये ने कहा है कि भारत में शहरीकरण औद्योगिक विकास का परिणाम नहीं है, बल्कि भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्रों से ही प्रारंभ हुई थी। इसकी पुष्टि हेतु घुरिये ने कुछ संस्कृत ग्रंथों और दस्तावेजों का उदाहरण देकर बताया कि सुदूर गाँव में बाजार की आवश्यकता के कारण शहरी क्षेत्रों का विकास हुआ। कृषि व्यवस्था के अंतर्गत अत्यधिक मात्रा में अनाज की खेती होने लगी। पैदावार बढ़ने से उसके विनिमय के लिए अधिक मंडियों तथा बाजारों की आवश्यकता पड़ी। कई ग्रामीण क्षेत्रों में किसी बड़े गाँव के एक भाग को मंडी या बाजार में बदल दिया जाता था, जिसका परिणाम यह हुआ कि ऐसे क्षेत्रों में कस्बों का निर्माण हो गया तथा उसमें धीरे–धीरे प्रशासनिक, न्यायिक और अन्य संस्थाएँ भी निर्मित हो गई। इस प्रकार घुरिये का मत था कि ग्रामीण शहरीकरण का कारण ग्रामीण स्थानीय आवश्यकताएँ थीं।

भारत में धार्मिक विश्वास एवं रीति–रिवाज

घुरिये ने 1950 से 1965 के बीच इस विषय पर 3 पुस्तकें लिखीं। अपने अध्ययन के द्वारा घुरिये ने बताया कि प्राचीन भारत, मिस्र और बेबीलोनिया में धार्मिक चेतना धर्म स्थलों से जुड़ी हुई थी। भारत और मिस्र की पूजा–पाठ की पद्धति तथा धर्म स्थलों की वास्तुकला में भी समानता थी। घुरिये ने भारतीय धर्म के विभिन्न देवी–देवताओं जैसे शिव, विष्णु और दुर्गा के उद्भव का अध्ययन किया है तथा पूजा की वृहत स्तरीय पद्धति में स्थानीय या उप क्षेत्रीय विश्वासों को जोड़ने की आवश्यकता को पहचाना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

है। इन देवी–देवताओं के आसपास धार्मिक समष्टि में भारत के विभिन्न नृजातीय समूह एकीकृत हो गए। महाराष्ट्र के गणेश उत्सव और बंगाल के दुर्गा पूजा उत्सव को लोकप्रिय बनाने में बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल जैसे राष्ट्रवादियों के प्रयास सम्मिलित थे, जो कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपने राजनीतिक विचारों के प्रचार के लिए धार्मिक दृष्टि का उपयोग कर रहे थे।

संस्कृति तथा सभ्यता

घुरिये के अनुसार संस्कृति आधुनिक सभ्यता का सामान्य मूल्य है जो मानवता के सामूहिक प्रयास से बना है। घुरिये ने संस्कृति के 5 मूल तत्वों का उल्लेख किया है– धार्मिक चेतना, चेतना, न्याय, ज्ञान और अभिव्यक्ति तथा सहिष्णुता। इसी तरह घुरिये ने सभ्यता के स्तर को भी चार भागों में बाँटा है। सभ्य, उचित सभ्य, अति उच्च सभ्य और पूर्ण सभ्य। घुरिये ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि कोई भी समाज पूर्णतया सभ्य नहीं होता है। सभ्यता में सामाजिक विकास हमेशा मौजूद रहता है तथा इतिहास हमेशा पूर्णता की ओर बढ़ता है। अति उच्च, सभ्य भविष्य का समाज है। प्रत्येक सभ्यता में कुछ विशिष्ट लक्षण अवश्य पाए जाते हैं।

भारतीय कला नृत्य और वेशभूषा का अध्ययन

घुरिये ने भारतीय कला, नृत्य और वेशभूषा पर विभिन्न पुस्तकें एवं लेख लिखकर इनमें भी अपनी रुचि को अभिव्यक्त किया है। उनका मत है कि हिंदू, जैन तथा बौद्ध धर्म के कलात्मक स्मारकों में कई तत्वों के दर्शन किए जा सकते हैं। लेकिन हिंदू और मुस्लिम स्मारक बिल्कुल भिन्न मूल्य पद्धतियों पर आधारित रहे हैं। भारतीय मंदिरों के प्रेरणास्त्रोत भारतीय तत्व थे जिनकी विषय–वस्तु वेदों, महाकाव्यों और पुराणों पर आधारित थी, परंतु मुस्लिम कला फारसी या अरबी संस्कृति पर आधारित थी। वे इस बात से सहमत नहीं थे कि भारत में मुस्लिम स्मारकों में हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों का समन्वय हुआ है। उनका मत था कि मुस्लिम इमारतों में हिंदू कला के तत्व को केवल सजावट के रूप में प्रयुक्त किया गया है। घुरिये ने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की वेशभूषा पर लिखते हुए हिंदू बौद्ध और जैन कलाकृतियों द्वारा विभिन्न कालों की वेशभूषा में भिन्नताओ का चित्रण किया है।

संदर्भ सूची:–

1.दोषी एस. एल., भारतीय सामाजिक विचारक, रावत पब्लिकेशंस जयपुर, 2010।
2.नागला बी. के., भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन, रावत पब्लिकेशंस जयपुर,2015।
3.रावत हरिकृष्ण, उच्चतर समाजशास्त्र विश्व कोष, रावत पब्लिकेशंस जयपुर एवं नई दिल्ली,2007।
4.जैन मीना, समाजशास्त्रीय विचारक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल,2022।
5.ओमेन टी.के. और मुखर्जी आर.एन., इंडियन सोशियोलॉजिकल : रिफ्लेक्शंस एण्ड इंटरोस्पेक्शन,पापुलर प्रकाशन, मुंबई,1986।
6.गुप्ता एम.एल.एवं शर्मा डी.डी., भारतीय समाजशास्त्र के पथ प्रदर्शक, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा।
7. महाजन धर्मवीर तथा महाजन कमलेश, भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली,2007।
8.पांडेय एस.एस., समाजशास्त्र सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के लिए, टाटा मैग्राहिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, 2009।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

9.अग्रवाल जी.के. समाजशास्त्र एसबीपीडी पब्लिशिंग हाउस, आगरा।

10. झा सुबोध भारतीय समाज एक समग्र अध्ययन, पीयुस बुक पब्लिकेशंस दिल्ली,2010 –2011।

11,प्रमानिक एस. के. सोशियोलॉजी ऑफ जी. एस. घुरिये रावत पब्लिकेशंस जयपुर 1994।